पाठ - 3

सुभद्रा कुमारी चौहान

बच्चो! आपने यह कविता तो सुनी होगी-

"बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।"

जानते हो, इस कहानी की रचना किसने की है? इसकी रचयिता हैं श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान । इन्होंने इसी तरह की अनेक कविताएँ लिखी हैं ।

'सुभद्रा ' का जन्म सन् 1904 ई0 में प्रयाग के निहालपुर मुहल्ले में ठाकुर रामनाथ सिंह के घर हुआ। इनकी माँ का नाम धिराज कुँवर था।

पाँच वर्ष की उम्र में इनको स्कूल में भर्ती किया गया । अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और काव्य-प्रतिभा के कारण वे सभी अध्यापकों की चहेती बन गईं । ये जब सातवीं कक्षा में थीं तब इन्हें महादेवी वर्मा की कविताओं के बारे में पता चला और दोनों मित्र हो गईं । इनकी मित्रता जीवन-पर्यन्त बनी रही ।

इनका विवाह खण्डवा निवासी वकील लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ। इसी समय जलियाँवाला बाग काण्ड हुआ। इस काण्ड से सारे देश में अंग्रेजों के प्रति रोष की लहर फैल गई। इसी बीच गांधीजी ने विदेशी वस्तुओं तथा असहयोग आन्दोलन के लिए छात्रों का आह्वान किया । इससे प्रेरित होकर सुभद्रा और लक्ष्मण सिंह ने भी इन आन्दोलनों में भाग लेने का निश्चय किया। सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्रीय आन्दोलनों में जी जान से योगदान दिया । उनके भाषण बहुत जोशीले होते थे तथा वे बीच - बीच में कविताएँ भी सुनाती थीं।

"विजयनी माँ के वीर पुत्र, पाप से असहयोग लें ठान ।
गुँजा डालें स्वराज की तान और सब हो जाएँ बलिदान ।।"

बड़ी संख्या में लोग उन्हें सुनने आते थे । एक बार अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया । तब वे गर्भवती थीं, फिर भी उन्होंने जेल के कष्ट सहे, जिससे उनकी तबियत खराब होती गई।

शिक्षण संकेत

- शिक्षक सुभद्राजी की कुछ प्रमुख कविताओं को छात्रों को सुनाएँ / व्याकरण का अभ्यास कराएँ। वीरता, दयालुता जैसे गुणों से परिचित कराएँ।

सत्याग्रह की समाप्ति के बाद बेटी सुधा का जन्म हुआ। उसके बाद अजय एवं विजय दो पुत्रों का जन्म हुआ। इसी समय इन्हें कविता संग्रह 'मुकुल' पर सेक्सरिया पुरस्कार मिला। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी तथा नर्मदा प्रसाद खरे के अनुरोध पर इन्होंने कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया, जिनके संग्रह 'बिखरे मोती' को छपवाने के लिए सुभद्रा को इलाहाबाद जाना पड़ा। इस संग्रह पर इनको पुनः सेक्सरिया पुरस्कार मिला। इसी समय वहाँ नरेन्द्र शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल और शमशेर बहादुर सिंह से इनका सम्पर्क हुआ, जो इनको मौसी कहा करते थे।

सुभद्रा जब भी इलाहाबाद जातीं अपनी बालसखी महादेवी वर्मा से अवश्य मिलती थीं । उनसे मिलकर उनका बचपन साकार हो उठता था।

असहयोग आन्दोलन समाप्त होने पर सुभद्रा समाज सेवा के कार्यों में भाग लेने लगीं । वे पुनः कविताएँ लिखने लगीं, किन्तु कविताएँ घरेलू जीवन से संबंधित होतीं या बच्चों के लिए अधिक होती थीं । जैसे –

''मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी ।
माँ ओ, कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी ।।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में, मुझे खिलाने आई थी ।''.

तथा

'' यह कदम्ब का पेड़, अगर माँ होता यमुना तीरे ।
मैं भी उस पर बैठ, कन्हैया बनता धीरे -धीरे ।।''

सन् 1936 में ये मध्यप्रान्त असेम्बली की जबलपुर महिला सुरक्षित सीट से विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुईं । ये साहस एवं करुणा की प्रतिमूर्ति थीं । तरह-तरह की सहायता के लिए लोग इनके पास आते थे। इन्होंने एक अनाथ बालिका को भी अपने यहाँ आश्रय प्रदान किया। इनकी बेटी सुधा का विवाह प्रेमचंद के बेटे अमृतराय से हुआ ।

लगातार दूसरी-बार सुभद्रा जबलपुर विधान सभा सीट से चुनी गईं और मध्यप्रान्त असेम्बली पहुँचीं । इसी बीच 30 जनवरी 1948 को गांधीजी की मृत्यु का समाचार मिला, जिससे उन्हें गहरा आघात लगा । वे टूट सी गईं । शायद उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्व आभास भी हो गया था इसलिए मृत्यु के तीन – चार दिन पहले उन्होंने अपनी बेटी सुधा से कहा था – ''मृत्यु के सत्य को भला कौन टाल सकता है ।'' नागपुर में शिक्षा विभाग की बैठक से लौटते समय सन् 1948 ई0 में इस अमर कवयित्री और कर्मठ स्वतंत्रता सेनानी की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई ।

''मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी ।''

विस्तार से जानिए

1. **जलियाँवाला बाग काण्ड** – अप्रैल 1919, बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक सभा चल रही थी। जिस पर जनरल डायर ने गोलियाँ चलवाईं। इसमें हजारों लोग मारे गए, जिनमें बच्चे, बूढ़े और स्त्रियाँ भी थीं। बाग का केवल एक दरवाजा खुला हुआ था, अतः लोग वहाँ घिर गए थे। इसकी दीवारों पर गोलियों के निशान आज भी दिखाई देते हैं।
2. **सविनय अवज्ञा आन्दोलन** – विनम्रता पूर्वक शासन के नियमों की अनदेखी करना या उनको न मानना ।
3. **सेक्सरिया पुरस्कार** – हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से दिया जाने वाला पुरस्कार जिसमें उस समय पाँच सौ रुपये तथा मानपत्र भेंट किया जाता था।
4. **मध्यप्रान्त असेम्बली**– उस समय का मध्यप्रदेश और बरार क्षेत्र जिसकी राजधानी नागपुर थी।

नए शब्द

तीक्ष्ण बुद्धि – तेज अक्ल। **काव्य प्रतिभा** – कविता रचने का गुण। **चहेती**– प्रिय, प्यारी। **प्रसिद्धि**–यश, ख्याति। **आह्वान**–बुलावा। **बहिष्कार** – त्याग। **प्रकाशन** – लिखित साम्रगी को छपवाकर प्रकाश में लाना, **सम्पादन**–प्रकाशन के योग्य बनाना, ठीक करना। **शैशव** – शिशु अवस्था। **प्रभात** – सबेरा। **विकास**– वृद्धि होना, बढ़ना। **यौवन** – जवानी। **मादक** – मस्त करने वाली। **हुलास** – खुशी। **आघात** – गहरा दुःख, दिल पर लगने वाली चोट। **असहयोग** – सहयोग न करना।

अनुभव विस्तार

1. जीवनी से खोजकर लिखिए –

(क) सही जोड़ी बनाइए –

(अ) सुभद्रा की माता – महादेवी

(ब) सुभद्रा की बालसखी– सुधा

(स) सुभद्रा की बेटी – लक्ष्मणसिंह

(द) सुभद्रा के पति – धिराज कुँवर

(ख) जीवनी पढ़कर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. सुभद्रा कुमारी का जन्म..... में हुआ ।
2. सुभद्रा को ..... पुरस्कार मिला ।
3. सुभद्रा के भाषण बहुत ..... होते थे ।
4. सुभद्रा कुमारी की कविताओं के संग्रह का नाम ..... है ।

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए –

1. सुभद्रा कुमारी चौहान का विवाह किसके साथ हुआ था ?
2. सुभद्रा कुमारी का पुरस्कृत कहानी संग्रह कौन सा है?
3. सुभद्रा ने अपनी बेटी का विवाह किसके साथ किया?
4. सुभद्रा की अमर कविता कौन–सी है ?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न –

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए –

1. सुभद्रा अपने अध्यापकों की चहेती क्यों थीं ?
2. सुभद्रा की सबसे प्रिय बालसखी कौन थीं और क्यों ?
3. सुभद्रा ने कौन–कौन से आन्दोलनों में भाग लिया ?
4. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं की क्या विशेषता थी ?

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िये –

1. सुभद्रा के माता-पिता जमींदार परिवार के थे ।
2. इन्होंने अपनी बेटी का विवाह प्रेमचंद के बेटे से किया ।

2 ऊपर दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों को देखिए –

- **माता-पिता** – माता से स्त्री जाति का तथा पिता से पुरुष जाति का बोध होता है। **बेटी-बेटे** से स्त्री तथा बेटे से पुरुष जाति का बोध होता है।
- यहाँ रेखांकित शब्दों से किसी जाति या लिंग का ज्ञान होता है। जैसे – 'पिता' तथा 'बेटे' शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वहीं 'माता' तथा 'बेटी' स्त्री जाति का बोध कराते हैं।

पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को 'पुल्लिंग' और स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को 'स्त्रीलिंग' शब्द कहते हैं।

प्रश्न– रेखांकित शब्दों के लिंग बदल कर वाक्य को पुनः लिखिए –

1. यह मेरे दादा हैं .....
2. शेर अपनी गुफा में सो रहा है ।.....
3. मामी घर जा रही हैं ।.....
4. शिक्षिका कल शाला आएगी ।.....
5. यहाँ महिलाओं का सम्मेलन हो रहा है ।.....

4. नीचे दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए –

(अ)

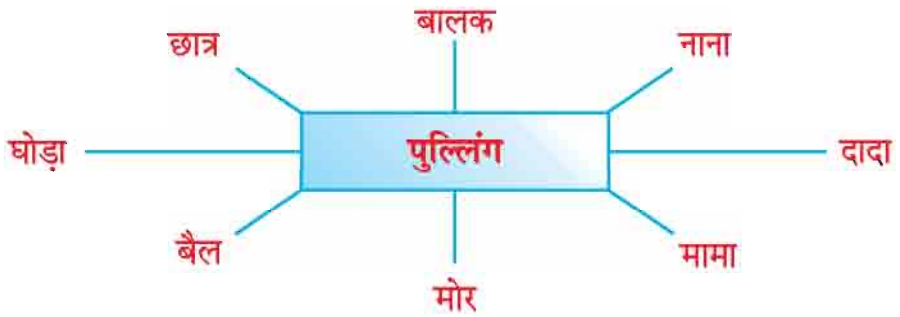

जैसे – बालक – बालिका, _____ , _____ , _____

_____ _____ _____

_____ _____ _____

(ब)

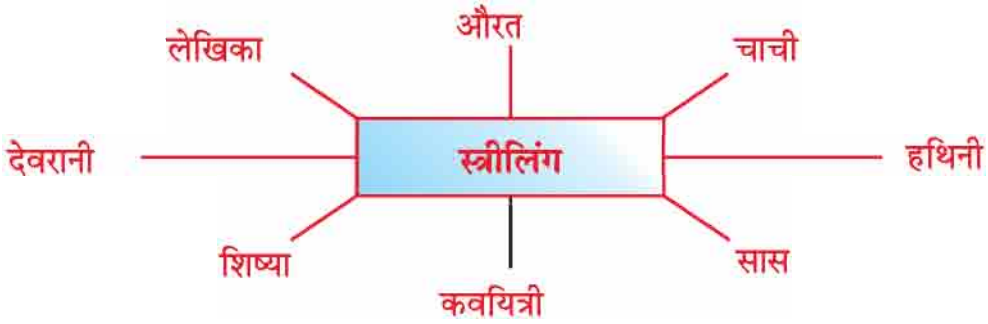

जैसे - **लेखिका- लेखक,** _____ _____ _____

_____ _____ _____

_____ _____ _____

- **इसके अतिरिक्त कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं, जो सदैव पुल्लिंग या स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं।**

  जैसे - स्त्रीलिंग - मछली, मैना, कोयल, छिपकली आदि ।

  पुल्लिंग - उल्लू, मच्छर, भेड़िया, मगर आदि ।

पढ़िए और समझिए

- " शिवाजी वीर योद्धा थे, उनकी वीरता से मुगल शासक घबराते थे। वे बालक ही थे, किन्तु उनका बालपन युद्ध की कहानियों को सुनते ही बीता था। तानाजी मालसुरे और सोनदेव उनके मित्र थे और मित्रता अनूठी थी।"

- ऊपर दिए गए रेखांकित शब्द, शिवाजी , तानाजी मालसुरे, और सोन देव व्यक्तियों के नाम हैं। अतः **ये व्यक्ति वाचक संज्ञा हैं।** वहीं वीरता, बालपन एवं मित्रता शब्द अपने पूर्व के शब्द वीर बालक एवं मित्र के गुण या भाव को व्यक्त करते हैं। अतः **ये भाववाचक संज्ञा हैं** यहाँ वीर, बालक व मित्र शब्द विशेष वर्ग या जाति को बताते हैं **अतः जाति वाचक संज्ञा हैं।**

यह भी जानें

- **जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए संज्ञा शब्द में प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाई जाती है।**

जातिवाचक संज्ञा	-	भाववाचक संज्ञा
बूढ़ा	-	बुढ़ापा
मनुष्य	-	मनुष्यता
पशु	-	पशुता
लड़का	-	लड़कपन

प्रश्न- नीचे दी गई वर्ग पहली मे संज्ञा शब्द छिपे हैं, उन्हें खोजिए और उन पर घेरा लगाइए।

बु	ढ़ा	पा	म	च	अ
ति	ख	ठ	स	आ	म
त	सा	शा	चू	ल	रू
लि	इ	ला	हा	बा	द
याँ	कि	सा	न	क	ज
ला	ल	कि	ला	फ	व

8 निम्नलिखित अनुच्छेद का श्रुतलेख कराइए-

सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और काव्य-प्रतिभा के कारण सभी अध्यापकों की चहेती बन गईं और कवयित्री के रूप में इनकी प्रसिद्धि हो गई । ये जब सातवीं कक्षा में थीं तब इन्हें महादेवी वर्मा की कविताओं के बारे में पता चला और दोनों मित्र हो गईं । इनकी यह मित्रता जीवन पर्यन्त बनी रही ।

अब करने की बारी

1. अपनी शाला के पुस्तकालय या अन्यत्र कहीं से सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी 'कदम्ब का पेड़ ' तथा अन्य कविताओं को खोज कर कण्ठस्थ कीजिए।
2. स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली अन्य नारियों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए तथा उनके चित्रों का संकलन कीजिए।
3. सुभद्रा की बालसखी महादेवी वर्मा के बारे में गुरुजी से और अधिक जानिए या पुस्तकों से जानने का प्रयास कीजिए ।